No part of this Special Issue shall be copied, reproduced or transmitted in any form or any means, such as Printed material, CD – DVD / Audio / Video Cassettes or Electronic / Mechanical, including photo, copying, recording or by any information storage and retrieval system, at any portal, website etc.; Without prior permission.

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal

ISSN 2349-638x

Special Issue No.100

26 th Nov. 2021

Disclaimer

Research papers published in this Special Issue are the intellectual contribution done by the authors. Authors are solely responsible for their published work in this special Issue and the Editor of this special Issue are not responsible in any form.

Sr. No.	Name of the Author	Title of Paper	Page No.
1.	डॉ. मनोज पाण्डेय	समकालीन कथा साहित्य में संवैधानिक मूल्य	1
2.	प्रो. (डॉ) सतीश यादव	संवैधानिक मूल्यों के टूटने की कसक : 'राग दरबारी'	4
3.	डॉ. कुमार बनसोडे	समकालीन हिन्दी कविता में सामाजिकता एवं मूल्य	11
4.	प्रा. अमोल रमेश इंगले	ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सपना' कहानी में व्यक्त धार्मिक भेदभाव का चित्रण	15
5.	डॉ.मा.ना.गायकवाड	बाइसवी सदी उपन्यास में संवैधानिक मूल्य	18
6.	प्रो.डॉ.एम.डी.इंगोले	वामनदादा कर्डक के काव्य में सामाजिक समता	21
7.	कैप्टन डॉ.प्रो.अनिता मधुकरराव शिंदे	'निर्माणों के पावन युग में', इस कविता में संवैधानिक मूल्य	24
8.	प्रो. डॉ. बबनराव रंभाजीराव बोडके	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में नव सामाजिक मूल्य	26
9.	डॉ.पवन नागनाथराव एमेकर	आशीर्वाद कहानी और संवैधानिक मूल्य	29
10.	प्रा.डॉ.विजय गणेशराव वाघ	हिंदी साहित्य में संवेधानिक मूल्य सूफीमत के परिप्रेक्ष्य में	31
11.	प्रा. डॉ. वसंत गाडे	समकालीन हिंदी कविता में मानव जीवन और बदलते संवैधानिक मुल्य	34
12.	डॉ. पुष्पा गोविंद गायकवाड	संत साहित्य में संवैधानिक मूल्य	40
13.	प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड	हिन्दी दलित उपन्यासों में संवैधानिक मूल्य	47
14.	प्रा.बाळासाहेब संभाजी कावळे	गिरिराज किशोर के उपन्यास में लोकतंत्रिक मूल्य की समिक्षा	51
15.	डॉ. अशोक शर्मे	अधिकार एवं समता की प्रखर दहाड - 'मूंगा नहीं था	55

Sr. No.	Name of the Author	Title of Paper	Page No.
16.	श्री. संतोष शिवराज पवार	हिंदी उपन्यास साहित्य में नव संवैधानिक मूल्य : शिक्षा एवं आर्थिक स्वावलंबन	60
17.	डॉ. अयुबखान गुलाबखान पठाण	मध्ययुगीन काव्य में संवैधानिक मुल्य (विशेष कवि संत कबीर)	63
18.	डॉ.सूर्यकांत शिंदे	सांप्रदायिक सौहार्द और मुंशी प्रेमचंद का कथा साहित्य	68
19.	डॉ.अशोक एम.पवार	हिन्दी की दलित कविता में स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा विषयक चिंतन	72
20.	डी. बी. केंद्रे	राजेन्द्रयादव के कथा साहित्य में संवैधानिक मूल्य	76
21.	डॉ.धीरज जनार्धन व्हत्ते	राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक भावना का चित्रांकन - 'जय भारत'	79
22.	प्रा.डॉ. सादिकअली हबीबसाब शेख	गोदान में राष्ट्रीय एवं समतावादी चेतना	82
23.	प्रा. विद्या बाबूराव खाडे	मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबुतरी ' में संवैधानिक मूल्य	85
24.	प्रा.डॉ.वीरश्री वशिष्ठजी आर्य	मध्यकालीन संत काव्य में संवैधानिक मूल्य	87
25.	डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ	महानगरीय जीवन में बदलते मानव मूल्य उपन्यास 'तिसरा आदमी'	90
26.	प्रा. संतोष येरावार	सलाम आखरी उपन्यास में सामाजिक न्याय को तरसती वैश्या	95
27.	प्रा. डॉ. मोहन मुंजाभाऊ डमरे	अज्ञेय की कहानियों में संवैधानिक मूल्य	99
28.	डॉ.नजीद शेख	शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार की पौराणिक नाट्याभिव्यक्ति : एक और द्रोणाचार्य	103
29.	एन.एस. भेंडेकर	जहीर कुरेशी की ग़ज़लें: धार्मिक संवेदना	108
30.	डॉ मुकुंद कवडे	धूमिल के काव्य में संवैधानिक मूल्यों का चित्रण	112

सलाम आखरी उपन्यास में सामाजिक न्याय को तरसती वैश्या

प्रा. संतोष येरावार
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

सलाम आखिरी उपन्यास में समाज द्वारा दिन में तिरस्कृत और रात में स्वीकृत वैश्या स्त्री के जीवन की वास्तविकता, संघर्ष और घृणा को मधु कांकरिया ने गहराई से उघाड़ा है । मधु कांकरिया जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज के उपेक्षित वर्ग को न्याय देने का कार्य किया है । सामाजिक अन्याय का शिकार वैश्या सदा से प्रताडित, उपेक्षित, अपमानित और घृणास्पद रही हैं । सामाजिक विषमता, और पाखंड के कारण वेश्याओं के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है । वैश्या पुरुषों के उपभोग का साधन है परंतु वह समाज के द्वारा अस्वीकृत है । सामाजिक विडंबना और विकृतियों का ही परिणाम है कि ना उन्हें शिक्षा मिलती है, न न्याय, न मान-सम्मान अगर कोई स्त्री वैश्या व्यवसाय छोड़कर मुख्य प्रवाह में आना चाहती है तो उसे प्रताड़ित कर तिरस्कृत किया जाता है । उनके बच्चों को स्कूलों में दाखिला नहीं मिलता, सदियों से सामाजिक अन्याय का शिकार बनी है । उसका संपूर्ण जीवन न्याय के लिए तरसता है । चकला चलाने वाले, दलाल, पुलिस, समाज का तथाकथित पुरुष वर्ग तथा वैश्या गमन के लिए आया ग्राहक सभी के द्वारा वैश्या ओपर अन्याय किया जाता है । और न्याय को तरसती वैश्या का अंत अत्यंत दयनीय होता है ।

समाज में व्याप्त विविध समस्याऐं उनके उपन्यास का प्रमुख विषय बने है । 'खुले गगन के लाल सितारे' इस उपन्यास में नक्सलवाद की समस्या को, 'पप्ताखोर' उपन्यास में युवकों की नशे की समस्या को, 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में नारी यातना, नारी का सामाजिक, धार्मिक शोषण और नारी संघर्ष को अभिव्यक्त किया है । 'सुखते चिनार' में सामाजिक समस्याओं को तो 'हम यहाँ थे' रचना में अंधविश्वास और धार्मिक आडंबर को उघाड़ा है । मधु जी ने समाज के विविध महत्वपूर्ण विषय को अपने लेखनी के माध्यम से समाज तक पहुंचाने का प्रयत्न किया है । २००२ में प्रकाशित सलाम आखिरी उपन्यास में मधु जी ने वेश्याओं के जीवन में व्याप्त विडंबना, विकृति, संघर्ष एवं वैश्या के प्रति पुरुषों और समाज की मानसिकता तथा सामाजिक अन्याय को उघाडा है । स्त्री को बाजारु वस्तु की तरह बिकना पड़ता है यह वैश्या जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है । वेश्यावृत्ति प्राचीन काल से मानव समाज में विद्यमान है । वेश्या के प्रति पुरुषों का रवैया अत्यंत भ्रमित, विकृत, तिरस्कृत होता है । भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्री के लिए कोई सम्मानित स्थान नहीं है । शोषण, संघर्ष, असमानता, परिवार में निम्न स्थान और अन्य किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं है । ऐसे समाज में वैश्या अत्यंत निम्न कोटी की तिरस्कृत नारी बन जाती है ।

'सलाम आखिरी' उपन्यास में कलकता के सोनागाछी, बहू बाजार, कालीघाट, बैरकपुर, खिदिरपुर, लालबती में चलनेवाले वैश्या व्यवसाय और वैश्याओं के जीवन, मानसिकता और समस्याओं को उघाड़ा है ।

मधु जी ने नूरी, कृष्णा, रमा, नलिनी, गायत्री, जूली, चंद्रिका, पिंकी, कजली, माया आदि के माध्यम से वेश्या व्यवसाय में होने वाले शोषण, वेश्याओं की आर्थिक सामाजिक स्थिति, जनमानस की वेश्याओं के प्रति मानसिकता, वेश्याओं के जीवन की [illegible] ओं को अपनी [illegible] के साथ अभिव्यक्त किया है । वेश्या के प्रति समाज की मानसिकता के विषय में मधु जी उपन्यास की भूमिका में कहती है, "समाज में

वेश्याओं की मौजूदगी एक ऐसा चिरंतन सवाल है, जिससे हर समाज, हर युग में अपने-अपने ढंग से जूझता रहा है, वैश्या को कभी लोगों ने सभ्यता की जरूरत बताया, कभी कलंक बताया, कभी परिवार की किलेबंदी का बाई-प्रोडक्ट कहा और कभी सभ्य, सफेद पोश दुनिया का गटर जो उनकी काम कल्पनाओं और कुंठाओं के कीचड़ को दूर अंधेरे में ले जाकर डंप कर देता है ।" मधु जी ने वेश्या व्यवसाय करने वाली महिलाओं के जाना पहचाना और लालबत्ती की नग्नता, क्रूरता, घृणा, तिरस्कार, मजबूरी और भयावहता को उघाडा है । वेश्या बनने के विविध कारणों को भी मधु जी ने अधोरेखित किया है ।

गरीबी, प्रेम में विश्वास घात, पति द्वारा जबरन वेश्याव्यवसाय, भौतिक साधनों की लालसा, बलात्कार आदि कारणों से अधिकतर वेश्या मजबूरन देह व्यापार करती हैं। गांव में बाढ़ के कारण निर्माण भुखमरी और आर्थिक विपन्नता के चलते नूरी अपने पड़ोस की लड़की के पास कलकत्ता आती है । उसे लगता है वह लड़की शहर में नौकरी करके अपने गांव पैसे भेजती है तो नूरी भी काम की तलाश में आती है और कलकत्ता आने के बाद उसे पता चलता है उसकी पड़ोस वाली लड़की देह व्यापार करती है । नुरी भी मजबूरन ना चाहते हुए देह व्यापार करने लगती है । बांग्लादेश की दो लड़कियों को उनकी खाला पैसो की लालसा के कारण कलकत्ता घुमाने के नाम पर बेचने का प्रयास करती है । बच्चो की मां होने के बावजूद गायत्री जैसी लड़कियों को उनके पति शरीर व्यवसाय करवाते हैं । नलिनी जैसी लड़कियां प्रेम के नाम पर फस जाती है और वेश्या व्यवसाय स्विकारती है । नलिनी को उसका प्रेमि गाव भगाकर लाता है और चकले पर बेच देता है । वर्तमान में प्रेम के नामपर केवल वासना को महत्व दिया जाता है और अनेको लड़किया शादी से पहले गर्भवती हो जाती है । ऐसे लड़कियों को ना परिवार स्वीकार करता है न समाज वासना कि शिकार लड़कियां देह व्यापार करने लगती है । कॉलेज की युवतीयां भौतिक लालसा और बाहरी चकाचौंध के मोह माया में फसकर कॉल गर्ल बनकर हॉटलो मे देह व्यापार करती है । माया कोमल कमसिन लड़कियों को वैश्या व्यवसाय में लाती है । ताकि अधिक पैसे मिल सके ।

बाजार में देह की बढ़ती मांग को पुरुषों की वासना, शहरी चकाचौंध, जल्दी अमीर बनने की लड़कियों की मानसिकता, बलात्कार, प्रेम का विकृत रूप और शरीर सुख की लालसा के कारण सर्वत्र देह व्यापार फल फुल रहा है । कलकत्ता में तकरीबन पचास हजार वेश्याएं और महानगरों में दस लाख से अधिक लड़कियां देह व्यापार करती है । जिसमें 14 वर्ष की लड़कियों से लेकर 40 वर्ष तक की नेपाल, भारत और बांग्लादेश से है । जो संज सवर कर अपने शरीर को बेचने के लिए खड़ी है, मधु जी के शब्दों में, "लीपि-पुती देह । आंखों में भविष्यहीनता । चेहरे पर सस्ता और भड़कीला मेकअप । रंगे होंठ । सस्ती चमक के आभूषण। चटक और सस्ती किस्म की पोशाकें । प्लास्टिक की चप्पले । कहीं चमड़े की भी । प्रतीक्षा के लाखों कल्प । अठराह से लेकर बयालीस की उम्र की लगभग सभी वारांग नाएं । तरह-तरह की बंगाली, नेपाली, और आगरा वाली । एक नजर में न हुस्न के जलवे । न अदाओं का जादू । न कला । न श्रृंगार । न साज, न आवाज । सिर्फ देह मादा देह ।"[1]

मधु जी ने कलकत्ता के लालबत्ती में वैश्या व्यवसाय करने वाले वैश्याओंका, वहा के परीवंश का, दलालों द्वारा वेश्याओं के होने वाले आर्थिक शोषण का भी चित्रण किया है । जिस घर में वह देह व्यापार करती हैं वह मकान और इलाके अत्यंत बदबूदार होते है । आरोग्य की कोइ सुविधा नही है । लाल बत्ती इलाके में हाफ रेट,

फूल रेट, दलाल और ग्राहक के कलह को भी मधु जी ने उद्घाटित किया है । कोई ग्राहक हाफ रेट देकर फुल का मजा उठाना चाहता है । दलाल लड़कियों को कम मेहनताना देते हैं । चकला चलाने वाली मालकिन, दलाल, ग्राहक और वेश्याओं के बीच गाली गलौच और लड़ाई झगड़े होते रहते हैं । पिंकी ग्यारह वर्षों से देह व्यापार करती हैं परंतु अपने लिए कुछ बचा नहीं पाती है । दलाल और चकले की मालकिन मालामाल होती है और वेश्याओं के हिस्से मात्र पीड़ा, शोषण, घृणा, दरिद्रता और बीमारी आती है । दलालों का एकमात्र काम ग्राहक लाना फिर वह कैसा भी क्यों ना हो । "सर, सर इधर चलिए... बस थोड़ा सा आगे, पटाखा माल है, जोरदार चीज । हां हां सर बस गारंटी ही समझिए... बस सर, एक नजर देख कर लीजिए... आप भी क्या याद रखेंगे !"[2] दलाल का एक मात्र उद्देश्य होता है अपनी जेब गरम करना और ग्राहक को फसाना जिस कारण चकले में हमेशा विवाद होते रहते हैं । दलाल ग्राहक से कहता है, "सर, सुनिए तो, उनकी बहुत वैरायटी है । आगरा वाली, नेपाली, बंगाली और सर मोहंडन भी है, खालिस मुसल्ली... कसम से सर, अरे झूठ क्यों बोलूंगा सर, और झूठ बोल भी दु तो भी क्या, सोलहा साल की कुड़ी तो जवान होनी है...."[3]

वैश्या जीवन अत्यंत दयनीय और घृणित होता है । लड़कियों को जवान होने तक उनके चकले में रखा जाता है और जैसे जैसे उसकी उम्र बढ़ती है वैसे-वैसे उसके अवस्था सोचनीय हो जाती है । रेशमी को चकले की मालकिन हकाल देती है और रेशमी भीख मांगने के लिए मजबूर हो जाती हैं और दर-दर की ठोकरें खाकर मर जाती हैं । अनेको वैश्याएँ गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो जाती है । रेशमी को भी एड्स जैसी जानलेवा बीमारी हो गई थी । गंभीर आरोग्य विषयक समस्या वैश्या जीवन का अंग बन गया है । अशिक्षा के कारण वैश्याओं का सार्वत्रिक शोषण होता है । दलाल, चकला मालकिन, सामान्य जनता, पुलिसवाले सभी उनको नोचने लगते हैं । औरतों के मजबूरी का फायदा उठाने में पुरुष अपनी महत्ता समझता है । सलाम आखरी उपन्यास की पिंकी "मरणासन्न अवस्था मे है, पर मरणा नही चाहती वह वैश्या, उसकी मा वैश्या, अपनी बच्ची भी इसी दुनिया मे या खुदा । इस दुनिया ने रंडी बनाया शायद वह दुनिया इतनी बुरी ना हो । पिंकी मर जाती है, उसकी बेटी रेशमी एच. आय. व्ही. पॉजीटीव है, पर वह इलाज करवाना नहीं चाहती । वह प्रतिशोध लेना चाहती है ।"[4]

सामाजिक अन्याय हि स्त्री को वैश्या बनने के लिए मजबूर करता है । पुरुष अपने स्वार्थ के लिये स्त्री का उपयोग करता है । उसे अपनी वासना का शिकार बना कर वेश्या व्यवसाय के लिये मजबूर बनाता है । सामाजिक विषमता का शिकार मात्र स्त्री होती है जिसे न्याय के लिए सर्वस्व दांव पर लगाना पडता है । वैश्या बनने के लिए मजबूर स्त्री और पुरुषो की विकृत, विक्षिप्त और वासनांध मानसिकता की वास्तविकता को मधू जी ने उघाडा है, "नुरी को माता पिता ने कलकत्ता काम के लिए भेज दिया उसे पाच छह वर्ष की बालिका को संभालाना था । मालिक रात को टॉफी का लालच देकर अपने पास बिठाता, धीरे धीरे उसे बिस्तर पर धकेल देता । इसी उपन्यास की नलिनी गाव मे रहती थी । छह भाई बहनो का परिवार खेती करते मां बाप रोज रोटीयां गिनते थे । एक बडी उम्र का मर्द नलिनी को कभी बिन्दी कभी चॉकलेट, कभी पायल देता, कभी समोसे खिलाता था । छह महिने होते न होते नलिनी उससे प्रेम करने लगी । दोनो ने घर से भागकर विवाह कर लिया और कलकता मे रहने लगे । दो तीन के बाद ही नलिनी को उसने वैश्या बाजार मे बेच दिया । इसी उपन्यास की वैश्या माया को एक ग्राहक दिखा ले गया । पूरे दिन रखा वहा उसके तीन दोस्तो ने बारी बारी से खुल्लम खुल्ला एकही कमरे मे...."

मधु जी ने सामाजिक अन्याय के शिकार वैश्या कि पिडा को वाणी प्रदान की है । वैश्या जीवन की क्रूरता का भयावह चेहरा मधू जी ने उघाडा है । "हमारे भाग्य में न खुशनुमा बचपन है, न शांत पौढावस्था । हमारे भाग्य मे सिर्फ सडक और जांघ होती है । वैश्या जीवन के संघर्ष की हकीकत से जुडे वाक्य पाठक को झकझोर कर रख देते । ग्राहको बनाम सभी उम्र के पुरूषो की यौनेच्छा को संतुष्ट करने की खातिर वैश्याए रोज बली का बकरा बनने को मजबूर है । उनके जीवन की बडी विडंबना है की देह के एवज में तो उनके साथ सहानुभूती रखी जाती है, न ही साधारण इंसान जैसा सुलूक किया जाता है । महज पेट भरने के लिए चंद रुपयो के आलावा कुछ नही मिलता ।"[6] वैश्या के साथ अमानविय व्यवहार सफेद पोष वर्ग की पशुता का प्रतीक हे । वैश्या का जीवन विडंबना और विकृतीयो से भरा होता है ।

सलाम आखरी उपन्यास वैश्या जीवन की वास्तविकता, त्रासदि, क्रूरता, भयावहता, कुरुपता, विडंबना, विषमता और घृणा को प्रखरता से उघाडता है। सामाजिक अन्याय, धार्मिक प्रथा - परंपरा, पुरुषी मानसिकता, सामाजिक कुरितियो के कारण वैश्या सदियो से प्रताडीत, तिरस्कृत और अपमानित रही है । उपन्यास मे चित्रित सामाजिक अन्याया के अनेको दृष्टांत समाज की आंखे खोलने का कार्य करते है । आर्थिक लालसा के कारण पिंकी तेराह वर्ष के उम्र मे वैश्या व्यवसाय में लाई जाती है। रेशमी को चकला मालकिन निकाल देती है और वह भीख मांगकर जीने को मजबूर हो मर जाती है । नलिनी को प्रेम जाल में फाँसकर वैश्या बनाया जाता है । वैश्या पिंकी के भाई राजा को स्कूल मे प्रवेश नही दिया जाता । पुलिस वाले बैरकपूर के महिला के साथ सामूहिक बलात्कार करते है । कजली वैश्या व्यवसाय छोडकर चौंका बर्तन करणा चाहती है । परंतु ऊसे समाज का कोई तबका स्वीकार नही करता । नुरी पेट की भूक मिटाने के लिए कलकत्ता जाती है और दुसरा काम न मिलने के कारण वैश्या व्यवसाय करती है । चकले की मालकिन मीना से शरीर व्यवसाय करवाती है परंतु दाम आधा देती है । पती-पत्नी से वेश्याव्यवसाय करवाते है । अनेको उदाहरण वैश्या के सामाजिक तथा आर्थिक अन्याय के उपन्यास में चित्रित है । सामाजिक बहिष्कार, गाली गलोच, मारपीट, दोगला पुरुष वेश्याओं का उपभोग भी करता हे और उसे कुलटा कलंकिनी, नीच एवं पतित भी कहता है । अपाहीज समाज, सामाजिक अन्याय, पुरुषी विषाक्त मानसिकता, आदि वेश्या की दुर्दशा का कारण है । न्याय को तरसती शोषित, पिडीत, वंचित, उपेक्षित एवं घृणित वैश्या जीवन का जिवंत दस्तऐवज सलाम आखरी उपन्यास हैं ।

संदर्भ सूची

1) सलाम आखिरी - मधु कांकरिया, पृ. सं. १५
2) वही पृ. सं. 14
3) वही पृ. सं. 14
4) मधु कांकरिया का रचना संसार, डॉ. उषा किर्ति राणावत, पृ. सं. 29
5) वही पृ. सं. 128

Principal
A V Education Society's
Degloor College Degloor